ललित निबन्ध

चोर ?

डॉ० पी० एस० सिन्हा

ऊ आपन घर छोड़के एगो बिरान जगे नोकरी खातिर चल देलस........। चलत........ चलत अपना इयार के भाई-भउजाई इहाँ सागर (म० प्र०) चल गइलें—एक दिन। 10-15 दिन एने-ओने घुमला पर जब नोकरी ना मिलल त भउजी राह मे खाये खातिर पूरी, अलुई के भुँजिया आ आम के आचार के दु गो फाँक रख के उनका के विदा कइली। ऊ सोंच-सोंच के बेआकुल रहले, ना जाने भाग मे का बा ? ऊ काहे केहू के निमन नइखे लागत ? घर होखे, ससुराल होखे चाहे समाज........। जब ऊ अकेले रहेलें त सोंच-सोंच के परेशान रहेलें आखिर अइसन कवन गलती जाने-अनजाने करेलें कि जे लोग उनका ढेर नजदीक इनका आवेला त दूर भाग जाला का बात ह.........? एक दिन ऊ ठान लेलें के आखिर बात का ह, हम जान के ही दम लेम, आखिर पीठ पीछे लोग हमरा के काहे गरिआवता ?................

रात के एक बजत रहे, ओकर अंघी भाग गइल सोंचत-सोंचत ...., आ ऊ ठान लेले की आज हम खोज के रहब कि का बात ह ? कि ढेर लोगन से उनका ना पटे जबकि ऊ तेज-तराड़ि हउअन बाकिर अवगुन के नाम पर कुछुओ ना मिली, खोजलो पर। दोसरा के बहिन-बेटियन के बहिन-बेटी आ मतारी अइसन देखल उनकर धरम ह। चोरी-चमारी त कबो कइबे ना कइले। गलती इहे रहल कि कबो गलती बरदास ना कइलें, आँख ना मुँदले, मुँह ना मोड़ले........। हमेशा गलती से बगावत कइल आपन धरम समझले......।

गावे के एगो घटना उनका इयाद आइल—उनकर भइया अपना बेटा के छठियार मनावे खातिर 1,000 रू० व्याज पर केहु से लेले रहलीं जवन 12,000 रू० हो गइल रहे। एह घटना के उनकर इयार बतवले कि तहार भइया सूद पर रुपया लेले बारे आ तू मौज-मस्ती से घुमत बार, तहार आउरो त फरज होला ? ऊ ओही घड़ी उनका संघे पोस्ट-ऑफिस आ बैंक जाके आपन 50 रू० के छः गो आर०डी० खाता बन्द क के 12,000 रू० भइया के हाथ मे देले आ 673 रू० अपना बगली में........। एक दिन घर में हिसाब होखे लागल, ई अतना रू० कमालें त का करेलें.....? उनकर बहनोइयो आइल रहलें। थनगे-थनगे बतलवलें आ खर्चा के हिसाब रख देलें जवना में बाबू जी के जिनगी से लेके ओह दिन तक के हिसाब रहे। घरे से 1976 के बाद से पढ़े के नाम पर 10 रू० भी ना मिलल रहे ना एगो अन्डर वियर— गंजी खरीदाइल। ऊ मैट्रिक कइसहूँ पास क के ट्यूशन पढ़ावत आ अपने पढ़ल शुरू कइलें। गाँवे रहले त अपना दुआर पर पढ़वले आ छपरा रहलें त घरे-घरे जाके पढ़वले। आ एही रूपया से किताब से ले के कपड़ा तक खरीदाइल। एक हाली (बार) माई लेंड़ी (अंडी) बेच के 70 रू० में कपड़ा खरीदे के देले रही। भाई लोगन के निमन-निमन कपड़ा, जूता-मोजा आ हमरा टुटही चप्पल आ फाटल कपड़ा..........आ ना जाने का-का। बाबूजी के बिचार रहे कि एक बेटा डॉक्टर, एक बेटा इन्जीनियर आ, ई खेती कराई— एही से इनका के टुटही चप्पल आ फाटल कपड़ा दियात रहे। एक दिन के एगो बात उनका आजो इयाद बा कि जब ऊ आई० एस० सी० में पढ़त रहलें आ बुशट के पंखुरा फाट गइल रहे, ओह दिन ओकरा लगे उहे एगो बुशट रहे, त ऊ उहे पहिन के कॉलेज गइलें। बाकिर उनका अपना पढ़ाई पर हर घड़ी भरोसा रहल। ट्युशन के पइसा मिलला के बादे बुशट सिआइल।

जब इनका हाथ में रुपया आवे लागल त घर के सब्जी, नेवता-हँकारी, आइल-गइल के खर्चा सब इनका कपारे आ गइल। जब-जब जरूरत पड़ल त घरे से जतना मंगाइल ऊ देबे कइलन।

एक हाली के बात ह—जब ऊ हाईस्कूल मे पढ़त रहले त गाँवे के लड़कियन पर व्यंग कहला खातीर ई एगो टोली बना के दोसरा गाँव के ढेर मन-बढ़ल लड़िकन के पिटबो कइलस लोग। कॉलेज में उहे बात.......। एक दिन रात के पटना मे अनजान लड़की ओरी एगो लमहर बदमास हाथ बढ़वलस त बेजनले ओकरा से भीड़ के हाथ-मुँह तोर-फोर के आपन जान बचावे खातिर भगले—जवना मे बगरा

के एगो बाबू साहेब साथ देले। ई सब सोच-सोच के ऊ चिहात रहले।

बाकिर आज उनकर मेहरारू रोज उनका के केहू-ना-केहू के संगे लगा के गारी देवेली......। काहे कि ऊ सोचलहूँ ना होइहें कि उनका पति अइसन मरद बहुत कम होखेले, कुत्ता अइसन के त गिनती ना कइल जा सके। ऊ सोच-सोच के परेशान रहलें कि कइसे अपना मेहरारू के समझावल जाव कि भलहीं पइसा के हमरा कमी बा बाकिर संस्कार-आ-चरित्र के कमी नइखे। जवना के बल-बूते हम जीयत बानी। रात-रात भर जाग-जाग के लिखे-पढ़े में लीन रहस आ उनकर मेहरारू ढुका लाग के निरेखत रहस कि कहीं कवनो लड़की-मेहरारू से मिले के चक्कर में ई सुतत नइखन, चाहे हमरा सुते के बाट देखत बारन, आ पढ़े-लिखे के बहाना करत बारन। ई बेचारा सोचत रह गइल कि कबो त हमार मेहरारू हमरा के जाने के चाहित—? अपना आँख पर के रंगीन चश्मा हटा के हमरा के देखित आ जानित-पहचानित कि हम ऊ ना हयीं जवन ऊ सोंचत बारी।

कुछ बरिस पहिले के बात ह। नागपुर (महाराष्ट्र) के एगो डिग्री कालेज में व्याख्याता के पद पर नोकरी लाग गइल। आ कॉलेज में एगो बंगाली मरद-मेहरारू दुनो पढ़ावत रहलें। लाइब्रेरी से कुछ किताबन के गायब भइला के शक इनका भइल। लाइब्रेरियन से पुछलें त उल्टा-पुल्टा बात आवे लागल। काहे कि लाइब्रेरियन के सहयोग से बंगाली बाबू किताब, पत्र, पत्रिका गायब करत रहलें। ई बेचारा सोच-सोच परेशान रहे कि हमार इमानदारिये आ जानकारी-योग्यता हमार पहचान रही जवना पर हम आँच ना आवे देब।

बाकिर एक दिन के बात ह जब कॉलेज के सचिव सह प्राचार्य बोला के कहलें, का तूँ इहो कहे लगल कि कॉलेज के पुस्तकालय के गलत-गलत काम होला, दु न० के खरीदारी होला ?........? ई तपाक से कहलें— "कवन साला कहलऽस रउआ सें ?" ऊ घंटी बजवलें कि चपरासी आ गइल। ऊ खीसिआइल कहले— "बंगाली बाबू को बुलाओ।" बंगलिया के आवते पुछलें— के कहले रहे.......ऊ बात। बंगाली बाबू नाकार गइलें। सब बात बुझ-समुझ के ऊ ओही दिन ठान लेलें कि अब दोसरे कॉलेज में गइला में भलाई बा। एगो सच्चा आदमी पर झूठा इलजाम ई लोग लगावे के चाहत बा........।

ऊ ओ कॉलेज के छोड़के सागर (म० प्र०) आ गइले। थोड़हीं दिन बाद ऊ दुनो प्राणी बंगाली बाबू भी बीड़ (महाराष्ट्र) चल गइल लोग। बाकिर बंगालियन से पाला पड़त रहल इनका। सागर के जवना कॉलेज में ई अइले ओ में पहिलहीं से एगो बंगाली डॉ० फालतु बंगोपाध्याय बा, जवन ह चार सौ बीस। बड़हन-बड़हन काम ऊ कागज में देखा के राज्य सरकार आ केन्द्रीय सरकार से मोट-मोट रकम लेके खा जाला, पचा जाला आ ढेकार तक ना आवे देला। ऊ अकेले उच्च शिक्षा में 4-5 विषय के पेपर सेटर, बाह्य-परीक्षक कई विश्वविद्यालयन में जवन कहीं भी, कबो संभव ना होला।

बंगाल रउआ गइल होखेम त ट्राम आ बस के पाकिट मरवन के देखले होखब ? कवनो शरीफ अकेला आदमी लगे अधिक रुपया होई त सब पाकिटमार मिल के ओ शरीफ आदमी के पाकिटमार..........पाकिटमार..........पाकिटमार कह के पीट दिहें, पइसो-रुपया ले लिहें आ थाना में रपटो लिखवा दिहें। ऊ शरीफ आदमी आपन माथा पिटत रह जइहें।

ओहू कालेज में पाकिटमरवन अइसन एगो लमहर जमात बा जे परीक्षा में पास करावे से फेल करावे तक के ठीका लेवेंले आ शरीफ लोग आपन इज्जत-आबरू बचावे में परेशान बा। कॉलेज के दु-चार गो लोग के शिकायत ओकरा घरहुँ पहुँच जाला कि इनका ना बोले आवे, ना सुने आवे, ना रुपया लेवे आवे........ना जाने कइसन आदमी हँउअन ? इनका साथे के लोग मकान खरीद लिहले, चार चक्का के गाड़ी खरीद लिहलें आ ऊ आजो गोड़े-गोड़े कॉलेज जाले-आवेलें। तनी रउरा इनका के समझावेनी काहे ना ? सिद्धांत से कहीं पेट भरेला— ?

अतने में इनका फिल्म जागते रहो इयाद पड़ल जवना के हिरो राज कपूर जी रहीं। रोजी-रोटी के चक्कर में ऊ कलकत्ता गइलें। रात में पिआसल छटपटात राज कपूर जी एगो इमानदार किसान के इमानदार बेटा पानी के चक्कर में......बाकिर पानी ना मिलल। ऊ पूरा रात भर लुका-लुका के सब देखत गइलें। लोग इनका के देख के चोर-चोर चिल्लाव, आ ई आपन जान बचावे में परेशान। साँच बात ई रहे कि जे लोग चिल्लात रहे ओही में के लोग अधिक चोर रहे, केहु बड़का त केहु छोटका। केहू नोट छापे, केहु शराब बनावे,

केहु शराब बेचे.........त केहु अपना मेहरारूये के गहना चोरावत रहे—ई सब राज कपूरजी देखनीं।

जब ई सब बात इनका दिमाग में आइल त सोचे लगले कि ठीक बा अब राज कपूर अइसन हमहूँ सारा दुनियाँ के बता देब कि चोर हम नाऽऽऽ, तू लोग। हम त एगो संत अइसन आदमी के ईमानदार आ चरित्रवान बेटा हईं, जेकरा जीनगी पर टी०वी०, सिनेमा आ पश्चिमी सभ्यता के इचको छाप नइखे पड़ल, ऊ उहे रहीहे जवन पहिले रहले। का हम चोर एही कारन हईं कि आपन इज्जत आ सामान चोरा के रखनी ?

अब भोर हो चलल रहे आ ओकर मेहरारू जागत अपना मरद के निहारत आ सूतत रात गँवा देहली। होत फजीरे पूछे लगली—आँख लसिआइल लागत बा,

काहे के इज्जत के साथे खेलत बानी, कबो धरा-पकड़ा जाइब त इज्जत के पाह लाग जाई..........। आ ऊ अपना मेहरारू के एक टक से उदास मन से देखत आँसुअन के धार बहावत सोचें लगलें..........। लोग का कही.......? का केहु मानी कि हमार मेहरारू झूठ बोलतिया.......? हमार हाल त ओही शरीफ आदमी के बा जवन चोर-उचक्कन चाहे पाकिटमारन से घेरा गइल होखे, आ सब मिल के उनके के चोर-उचक्का चाहे पाकिटमार कहत होख सन—चाहे घर होखे चाहे बाहर। ❖❖❖

65, शिव नगर, फेज I, पुष्पा नगर के पास,
भोपाल-462010(म०प्र०),
मोबाइल नं०-09329472282

नारी के तइयारी

✍ हरेन्द्र नाथ पाण्डेय

अंधियारी रतिया बीत गइल
भोरवा आइल तइयारी के,
रास्ता छोड़ऽ उनका खातीर
अब आवता रथ नारी के।

छोड़ के आंगन, घूंघट, परदा,
चल पड़ली सब देशवन में।
आपन राह बनावत जालीं,
तरह तरह के भेषवन में।

रोक सकीना इनकर गोड़वा,
कवनो अइसन सिकड़ में।
चलते जइहन आसमान ले
जंगल, झाड़ी, पथर में।

झूठ मूठ के परथा भीती,
घेर ना पइहन बढ़ती के,
घर मे नारी धरम निबहीयें
सर-समाज के चढ़ती के।

सेना में भी रूप देखवलीं,
शक्ति भरल जवानी के।
सहयोगी ई बनके लड़ली,
काम रहल मरदानी के।

छोटा बड़ ना समझ, भइया,
बेटी बेटा भइला के।
नाम उठइहे दूनू के ई
अपना जय जस कइला के।

दुर्गा, भारती, लक्ष्मी बन के
सब जुगन, सब रूपन में।
मरद के रंछा कइले बाड़ी,
जीवन के सुख दुखन में।

गोला रोड-दानापुर